ॐ नमः शिवाय



शिवकवच

भाषाटीका



संकलन कर्त्ता—
गौरीशंकर गनेड़ीवाला

सन् १९३४ ई० मूल्य ।)॥

श्रीशिवकवच

(भाषाटीका सहित)

टीकाकार—
गौरीशङ्कर गनेड़ीवाला

प्रकाशक—
भक्ति-ग्रन्थमाला कार्यालय,
छपरा।



मकरसंक्रान्ति, १९९०

मुद्रक—सहादुरराम,

हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स, नीचीबाग, बनारस सिटी ।

वक्तव्य

'कवच' का अर्थ है 'जिरहवख्तर'। जिस प्रकार युद्ध में कवच के पहन लेने से शरीर में शत्रुओं के अस्त्र और शस्त्र कोई असर नहीं करते, योद्धा युद्ध में संमुख लड़ा करता है और उनके प्रहारों से वचा रहता है, उसी प्रकार 'शिवकवच' का अनुष्ठान करने से मनुष्य आधिभौतिक और आधिदैविक विपत्तियों से वचा रहता है और यदि उनमें पड़ गया हो तो उनसे छूट जाता है। यह स्तोत्र अमोघ है और यदि यह निष्काम भाव से पढ़ा जाय तो इसके द्वारा भगवत्प्राप्ति तक हो सकती है। इसी लिये हम इसको भक्तजनों के हितार्थ भाषा टीका सहित प्रकाशित कर रहे हैं। इसके विषय में अभी हाल में गोरखपुर से निकलनेवाले 'कल्याण' के 'शिवांक' में लाला कन्नोमल एम. ए. ने एक वहुत विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित कराया है, जो उक्त अंक के पृष्ठ १३२ में छपा है, जो लोग इसके विषय में विशेष रूप से जानना चाहें वे वहाँ देख सकते हैं।

मकरसंक्रान्ति, १९९०
भक्ति-ग्रन्थमाला कार्यालय,
छपरा।

विनीत—
गौरीशङ्कर गनेड़ीवाला



अन्त्यजो वाधमोऽवापि मूर्खो वा पतितोऽपि वा ।

शिवप्रपन्नश्चेत्कृष्ण पूज्यस्सर्वसुरासुरैः ।। *

दशार्ण नामक देश में वज्रबाहु नाम का राजा राज्य करता था। उसकी बड़ी रानी का नाम सुमति था। जब सुमति गर्भवती हुई तो उसकी सौतों ने डाह करके उसे विष दे दिया, पर 'शिवमाया गरीयसी' भगवान् शिव की माया प्रबल है। उस भयंकर विष के पान कर लेने पर भी उस रानी का कुछ नहीं हुआ, उसके प्राण बच गये। पर विष के प्रभाव के कारण उसे मरणान्त क्लेश हुआ। जब उसका प्रसवकाल आया तब कठिन वेदना के अनन्तर उसके पुत्ररत्न की उत्पत्ति हुई। पुत्र के जन्म लेने के पश्चात् वह पतिव्रता और नवजात बालक दोनों विष के शरीर में बिंध जाने के कारण व्रणों (फोड़ों) से अत्यन्त क्लेश पाने लगे। राजा ने वैद्यों द्वारा अनेक उपचार कराये, पर वे किसी प्रकार नीरोग नहीं हुए। पीड़ा

---

* हे कृष्ण, अन्त्यज, अधम, मूर्ख अथवा पतित कोई भी हो, शिव की भक्ति करने मात्र से वह देवताओं और असुरों सबके द्वारा पूज्य हो जाता है। यह उक्ति श्रीकृष्ण के प्रति उपमन्यु की है।

के कारण उन्हें रात्रि में निद्रा नहीं आती थी। रानी अपने पुत्र की वेदना से बहुत दुःखी थी। वह अत्यन्त दुर्बल हो गयी थी। उनके कराहने से राजा को भी रात्रि में निद्रा नहीं आती थी। इसी प्रकार कुछ काल व्यतीत हो गया। अन्त में उस स्वार्थपरायण राजा ने अपनी अन्य रानियों के कहने में आकर उस रानी को पुत्र सहित निर्जन वन में छोड़वा दिया। इस प्रकार निर्वासित हो जाने पर रानी उस निर्जन वन में भूख और प्यास से तड़फने लगी। उस असहाय और दीना नारी के लिये पग-पग भूमि भारी हो गयी। जब वह उठकर चलने का उद्योग करती तो गिर पड़ती। उसके पैर और शरीर काँटों से छिद गये थे, वह सूखकर काँटा हो गयी थी। किसी प्रकार गिरती-पड़ती और भटकती अनेक बाधा और विघ्नों का सामना करती हुई वह दैवयोग से एक नगर में पहुँची। यह पद्माकर नाम के एक वैश्य की राजधानी थी। उस वैश्य की एक गृहदासी ने उसे देखते ही समझ लिया कि यह किसी भले घर की स्त्री है। उसने बड़े प्रेम के साथ रानी से उसका वृत्तान्त पूछा और सब बातें जानकर वह अपने स्वामी के पास गयी और उसने रानी की करुणापूर्ण कहानी उस वैश्य से कह सुनाई। उस धर्मात्मा वैश्य ने व्यग्र रानी को बुलवा भेजा और उसे अश्वासन देकर एक सुन्दर स्थान में ठहरा दिया। उसने परदुःखकातरता से रानी के लिये अन्न-वस्त्र का भली भाँति प्रबन्ध कर दिया। उसके सोने के लिये सुन्दर पलंग लगवा दिया। वह सुमति को माता की भाँति मानने लगा। उस वैश्य

ने भी उनके नीरोग होने के अनेक उपाय किये, पर सब व्यर्थ। अन्त में उस बालक की मृत्यु हो गयी।

अपने पुत्र को मृत देखकर रानी बड़े करुण स्वर से विलाप करने लगी। वह शोक से मूर्च्छित होकर सूखी लता की भाँति धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ी। जिस समय रानी इस प्रकार विलाप कर रही थी, उसी समय वहाँ पर ऋषभदेव नामक शिवयोगी आ पहुँचे। पद्माकर वैश्य ने पाद्य, अर्घ्य आदि के द्वारा उनका यथावत् पूजन किया। जब उनकी दृष्टि पुत्र के शोक में विकल रानी पर पड़ी, तब वे उसे इस प्रकार समझाने लगे कि बेटी, तू इस प्रकार शोक से विह्वल होकर विलाप क्यों कर रही है, इस संसार में कौन उत्पन्न होता है और कौन मरता है ? मनुष्य का शरीर तो पानी के बुलबुलों के ऐसा है। जैसे पानी में बुलबुले उठते और नष्ट होते रहते हैं उसी प्रकार मनुष्य संसार में जन्म लेता और मरता रहता है। संसार में इसी से कहीं शान्ति और कहीं अशान्ति बनी रहती है। इसलिये हे बेटी, फेन के समान इस शरीर के मरने पर शोक नहीं करना चाहिए। विद्वान् लोग इसी से इसके नष्ट हो जाने पर शोक नहीं करते। प्राणियों की सृष्टि गुणों के अनुसार होती है। अपने कर्मानुसार उन्हें अनेक योनियों में भटकना पड़ता है। वे वासना के फेर में सोते रहते हैं और काल उन्हें खींच ले जाता है। सत्त्वादि तीन गुणों की उत्पत्ति माया से है और इन्हीं गुणों से शरीर की उत्पत्ति होती है। वासना के अनुसार मनुष्य सत्त्वगुण से देवत्व, रजोगुण से

मनुष्यत्व और तमोगुण से पशुत्व और तिर्यक् योनि को प्राप्त होता है। इस संसार में कर्म के बन्धन के कारण मनुष्य ऐसी ही ऐसी दुःखदायक गति को वारंवार प्राप्त होता है। जब कल्प-पर्यन्त आयुवाले देवताओं का उलट-पलट हो जाता है तो फिर अनेक रोगों से ग्रसित मनुष्य की क्या कथा है! पानी के बुलबुले के सामान प्राणी अव्यक्त से उत्पन्न होता है और फिर उसी में लीन हो जाता है। उसकी मध्यावस्था व्यक्त सी जान पड़ती है।❀ जब प्राणी गर्भ में आया तो उसके नाश की भी कल्पना हो जाती है। अरी पगली, इस अन्य शरीरवाले अपने पुत्र को भी तू अपने शरीर से उत्पन्न मल की भाँति समझ और शोक करना छोड़ दे। सुमुखि, आज यदि एक मनुष्य की मृत्यु हुई है तो कल दूसरे की होगी। इसलिये सदा न रहनेवाले शरीर के लिये इतना शोक करना व्यर्थ है, एकदम उचित नहीं है।

मृत्यु सदैव समीप खड़ी है, इसलिये वताओ प्राणियों को कौन सा सुख है? क्या व्याघ्र के सामने रहने पर पशुओं को भोजन रुच सकता है? इसलिये हे सुमुखि, यदि तुम जन्म और वृद्धता को जीतना चाहती हो तो सबके स्वामी, मृत्यु को भी जीतनेवाले उमापति श्रीशंकर की शरण में जाओ। जब तक देह-धारी श्रीशिवजी के चरण-कमलों की शरण में नहीं जाता तभी

❀ अव्यक्ताज्जायते जन्तुरव्यक्ते च प्रलीयते।
मध्ये व्यक्तवदाभाति जलबुद्बुदसन्निभः॥

तक उसे घोर मृत्यु का भय सताता है और तभी तक उसे जन्म और बुढ़ापे का भी भय बना रहता है। इस अत्यन्त दुःखदायी संसार में जब प्राणी का मन दुःख का अनुभव कर लेने के पश्चात् जगत से विरक्त हो जाय तब उसे श्रीशिवजी का ध्यान करना चाहिए। शिवजी के ध्यान रूपी रसामृत का मन से पान कर लेने पर प्राणी को फिर संसार के विषय रूपी मदिरा की प्यास नहीं रह जाती। सबके लगाव को छोड़कर जब मन वैराग्य से बँध जाता है और देवदेव शंकर के चरणों में मग्न हो जाता है तब फिर प्राणी का जन्म नहीं होता। इसलिये हे भद्रे, शिवजी के ध्यान के एक मात्र साधन इस मन को शोक और मोह से युक्त मत करो, शिवजी को भजो।*

---

* नित्यं सन्निहितो मृत्युः किं सुखं वद देहिनाम् ।
व्याघ्रे पुरःस्थिते ग्रासः पशूनां किन्तु रोचते ॥
अतो जन्मजरां जेतुं यदीच्छति वरानने ।
शरणं व्रज सर्वेशं मृत्युञ्जयमुमापतिम् ॥
तावन्मृत्युभयं घोरं तावज्जन्मजराभयम् ।
यावन्नो याति शरणं देही शिवपदाम्बुजम् ॥
अनुभूयेह दुःखानि संसारे भृशदारुणे ।
मनो यदा वियुज्येत तदा ध्येयो महेश्वरः ॥
मनसा पिबतः पुंसः शिवध्यानरसामृतम् ।
भूयस्तृष्णा न जायेत संसारविषयासवे ॥

उन शिवयोगी ऋषभदेव के समझाने के उपरान्त रानी ने ऋषि के चरणों में प्रणाम किया और तब उसने नम्रता के साथ उन्हें प्रत्युत्तर दिया कि भगवन्, मुझे प्यारे बन्धुओं ने त्याग दिया है। महारोगों से मैं विकल हूँ। मुझ दुखिया का पुत्र भी मर गया है। अब मेरी मरने के सिवा और कौन गति है ? मैं तो इसी पुत्र के साथ मरना चाहती हूँ। यह मेरा अहोभाग्य है कि मरने के समय आप ऐसे महात्मा के दर्शन हो गये। जब ऋषि ने उस रानी के ये करुणापूर्ण वचन सुने तो उनके हृदय में भी करुणा उमड़ पड़ी। उन दयानिधान ने शिवजी के मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म ले जाकर उस बालक के मुख में डाल दी। भस्म के मुख में जाते ही मृत बालक के शरीर में प्राण का संचार होने लगा। बालक ने धीरे-धीरे आँखें खोल दीं। वह दूध पीने की इच्छा से रोने लगा। यह चमत्कार देखते ही रानी का हृदय आनन्द से गद्गद हो गया। वह प्रसन्नता से विह्वल हो उठी। उसके नेत्र चंचल हो गये। वह उन्मत्तों की भाँति इधर-उधर देखने लगी। उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गयी। उसने लपककर बालक को गोद में उठा लिया

विमुक्तं सर्वसङ्गैश्च मनो वैराग्ययन्त्रितम् ।
यदा शिवपदे मग्नं तदा नास्ति पुनर्भवम् ।
तस्मादिदं मनो भद्रे शिवध्यानैकसाधनम् ।
शोकमोहसमाविष्टं मा कुरुष्व शिवं भज ॥

और उसे ऋषभदेव के चरणों में रख दिया। ऋषभदेव ने भस्म से उनके शरीर के व्रणों को भी अच्छा कर दिया। वे दोनों ही दिव्य शरीरवाले हो गये। चरणों में पड़ी हुई उस रानी को दया से विह्वल होकर ऋषि ने उठा लिया और समझाया कि हे बेटी, तुम्हारा यह पुत्र आगे चलकर बहुत प्रसिद्ध होगा और इसका नाम 'भद्रायु' होगा। इसे इसका राज्य मिलेगा और यह सुखपूर्वक उसका भोग करेगा। जब तक तुम्हारा बच्चा भली भाँति विद्या की प्राप्ति न कर ले तब तक तुम इसी वैश्य के घर पर रहो।

सोलह वर्ष व्यतीत हो जाने पर ऋषभ योगी फिर उनके घर पर आये। रानी ने उनके चरणों में वारंवार प्रणाम किया। हर्ष के साथ उनका पूजन किया। तब रानी ने अपने पुत्र को ऋषि के चरणों में डाल दिया और कहा कि हे गुरो, यह आपका पुत्र है और आप इसके प्राण देनेवाले पिता हैं। अब आप इसको अपना शिष्य बनाइये और इसे अपनी शिक्षा द्वारा अनुगृहीत कीजिये। उसके ऐसे भक्तियुक्त वचन सुनकर महा बुद्धिमान् उन शिवयोगी ने उस कुमार के सिर पर हाथ रख कर उसे उपदेश देना आरम्भ किया। ऋषभजी ने कहा कि वेद, स्मृति और पुराणों में कथित सनातनधर्म का वर्ण और आश्रम के कर्तव्यानुसार पालन करना चाहिए। हे वत्स, सत्पुरुषों के मार्ग का अनुसरण करो और उत्तम आचरण से रहो। देवताओं की आज्ञा का उल्लंघन न करो। गौ, ब्राह्मण और

गुरुजनों में सदैव भक्ति रखो। प्राणों पर भी संकट आ पड़े तो भी सत्य को मत छोड़ो। हे महाबाहो, पराये धन, पराई स्त्री तथा देवता और ब्राह्मण की वस्तुओं में कभी तृष्णा न करो। क्षत्रियों के धर्म में परायण तो रहो, पर वृथा हिंसा को छोड़ दो। नीरस वैर, वृथा बकवाद और पराई निन्दा का परित्याग कर दो। जब नवीन और प्रिय भक्ष्य पदार्थ प्राप्त हो तो उसे शिव जी को पहले अर्पण करके तब स्वयं भोजन करो, अथवा शिव जी के निमित्त ब्राह्मणों को देकर तब उसका आहार करो। जो कुछ दान करो, जो कुछ कर्म करो, जो कुछ जप, स्नान, हवन, तप आदि करो सबको देवदेव शिवजी को निवेदन करो। भोजन करते हुए, पढ़ते हुए, सोते हुए, घूमते हुए, देखते हुए, सुनते हुए, कुछ कहते हुए या कुछ लेते हुए तुम बराबर शिवजी का चिन्तन किया करो। रुद्राक्ष की माला का कंकण तुम्हारे दोनों हाथों में बँधा हो और भाल पर उज्ज्वल भस्म वा त्रिपुंड सुशोभित हो, इस प्रकार तुम सदा पञ्चाक्षर मन्त्रराज का जप करते हुए पशुपति शंकर के चरणों का चिन्तन करो, उनमें तुम्हारा मन रमे। ❀

❀ श्रुतिस्मृतिपुराणेषु प्रोक्तो धर्मः सनातनः।
वर्णाश्रमानुरूपेण निषेव्यः सर्वदा जनैः॥
यच्च तप्तं तपः सर्वं तच्छिवाय निवेदय।
भुञ्जानश्च पठन्वापि शयानो विहरन्नपि॥

ऋषभ योगी द्वारा प्राप्त इसी 'शिवकवच' को धारण कर भद्रायु ने अपने राज्य को पाया और अनेक सुखभोग भोगने के अनन्तर उसे पञ्चभौतिक शरीर से ही शिवजी के दर्शन प्राप्त हुए। अन्त में वह अपने पिता वज्रबाहु और माता तथा पत्नी सहित बड़े-बड़े योगियों को भी कठिनता से प्राप्त होनेवाले अव्यय शिवलोक को गया। 'भद्रायु' की कथा 'शिव-भक्तमाल' के नवासीवें रत्न में दी गयी है।

मकरसंक्रान्ति, १९९०
भक्ति-ग्रन्थमाला कार्यालय,
छपरा।

विनम्र—
गौरीशङ्कर गनेड़ीवाला

पश्यञ्छृण्वन्वदन्गृह्णन्शिवमेवानुचिन्तय।

रुद्राक्षकङ्कणलसत्करदण्डयुग्मो भालान्तरालधृतभस्मसितत्रिपुण्ड्रः।
पञ्चाक्षरं परिपठन्परमन्त्रराजं ध्यायन्सदा पशुपतेश्चरणं रमेथा॥

भक्ति-ग्रन्थ-माला



शिवयोगी (ऋषभदेवजी) द्वारा भद्रायु को जीवन-प्रदान

❀ श्रीशङ्कराय नमः ❀

श्रीशिवकवच

(न्यासादिविधि)



ॐ अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ऋषभयोगीश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवरुद्रो देवता ह्रां बीजं ह्रीं शक्तिः ह्रूं कीलकं साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

अथ न्यासः

ॐ नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ नं नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ मः नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ शिं नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शिं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ वां नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वां कनिष्ठिका-

भ्यां नमः। ॐ यं नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नं शिरसे स्वाहा। ॐ मः नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मः शिखायै वषट्। ॐ शिं नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शिं कवचाय हुं। ॐ वां नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं नमो भगवते महारुद्राय ज्वलज्ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यं इत्यस्त्राय फट्।

इति न्यासः।

ॐ भूर्भुवः स्वः इतिदिग्बन्धः। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। ॐ नमः शिवायेति मन्त्रजपः (१०८)।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिन्दमम् ।
सहस्रकरमत्युग्रं वन्दे देवं सदाशिवम् ॥
अतः परं सर्वपुराणगुह्यं
निःशेषपापौघहरं पवित्रम् ।
जयप्रदं सर्वविपत्तिमोचनं
वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते ॥*

श्रीशिवकवच प्रारम्भः

ऋषभ उवाच—

नमस्कृत्वा महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ १ ॥

---

* इसके उपरान्त समस्त पापों को हरनेवाला और जयदायी तथा सब विपत्तियों से छुड़ानेवाला सब पुराणों में गुप्त शिवजी का कवच तुम्हारे हित के लिये कहूँगा ।

श्रीशिवकवच भाषाटीका

वन्दौं गणपति प्रेम सों, वन्दौं गिरिजा माय ।
शम्भु-चरण-रति होय अति, दीजिय वर हरषाय ॥

१—ऋषभजी बोले कि मैं अब सर्वव्यापी महादेवजी को प्रणाम करके मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करनेवाले शिवमय वर्म (कवच) को कहूँगा ।

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ॥ २ ॥
हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं
स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं
ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम् ॥ ३ ॥
ध्यानावधूताखिलकर्मबन्ध-
श्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा
शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम् ॥ ४ ॥

२—पवित्र स्थान में बैठकर और यथायोग्य आसन (पद्मासन अथवा सिद्धासन) लगाकर जितेन्द्रिय और प्राणों को जीतकर मनुष्य विकाररहित शिवजी का चिन्तन करे।

३—हृदय रूपी कमल के भीतर विराजमान, अपने तेजः से आकाश को व्याप्त कर लेनेवाले, इन्द्रियों से परे, सूक्ष्म, अनन्त, आद्य और परम आनन्दमय शिवजी का ध्यान करे।

४—ध्यान के द्वारा समस्त कर्मबन्धन को नष्ट करके और चिदानन्द में चित्त को लीन करके षडक्षर के न्यास से मन को सावधान करके मनुष्य शिवजी के इस कवच से अपनी रक्षा करे।

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा
संसारकूपे पतितं गभीरे।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं
धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ॥ ५ ॥

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति-
र्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः
स ईश्वरः पातु भयादशेषात् ॥ ६ ॥

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं
पायात्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।

५—सब देव रूप शिवजी मुझ संसार रूपी कूप में पड़े हुए की रक्षा करें और उत्तम मन्त्रों का मूल उनका दिव्य नाम मेरे हृदय के सब पापों का नाश करे।

६—विश्वमूर्ति और ज्योतिर्मय आनन्दघन चैतन्यात्मा शिवजी सर्वत्र मेरी रक्षा करें। सूक्ष्म से सूक्ष्म और विशाल से विशाल शक्तिवाले एकमात्र ईश्वर सब प्रकार के भय से मेरी रक्षा करें।

७—जो पृथ्वी के रूप से संसार का भरण-पोषण करते हैं वे अष्टमूर्ति गिरीशजी पृथ्वी से मेरी रक्षा करें और जो जल

योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति
सञ्जीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥ ७ ॥

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा
सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः ।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्ने-
र्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥ ८ ॥
प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो
विद्यावराभीतिकुठारपाणिः ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः
प्राच्यां स्थितो रक्षतु मामजस्रम् ॥ ९ ॥

के रूप से मनुष्यों को जीवन प्रदान करते हैं वे जल से मेरी रक्षा करें।

८—कल्प के अन्त में सब लोकों को भस्म कर जो अत्यन्त लीलामय नृत्य करते हैं वे कालरुद्र दावाग्नि, पवनादि के भय और सब सन्तापों से मेरी रक्षा करें।

९—देदीप्यमान बिजली तथा सोने के समान प्रकाशवाले और विद्या, वर, अभय एवं कुठार को हाथ में लिये हुए चार मुख एवं तीन नेत्रवाले वे महान् पुरुष शिवजी पूर्व में सदैव मेरी रक्षा करें।

कुठारवेदांकुशपाशशूल-
कपालढक्काक्षगुणान्दधानः ।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः
पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥१०॥

कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकावभासो
वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः
सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥११॥

वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः
सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः ।

१०—कुठार, वेद, अंकुश, फाँसी, शूल, कपाल, नगाड़ा और रुद्राक्ष की माला को धारण करनेवाले नीलकान्तिवाले त्रिनेत्र अघोरजी दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें।

११—कुन्द, इन्दु (चन्द्रमा), शंख और स्फटिक के समान प्रकाशमान् तथा वेद, रुद्राक्ष की माला, वरदान और अभय से चिह्नित (हस्त) अत्यन्त प्रभावयुक्त चार मुख एवं तीन नेत्र वाले सद्योधिजात (तत्काल प्रकट होनेवाले) पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें।

१२—वर, रुद्राक्षमाला, अभय और टंक को हाथ में लिये

त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां
पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥१२॥

वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्क-
कपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा-
मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥१३॥

मूर्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलि-
र्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः ।
नेत्रे ममाव्याद्भगनेत्रहारी
नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥१४॥

हुए कमल की केसर के समान रंगवाले त्रिलोचन चतुर्मुख वामदेवजी उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें।

१३—वेद, अभय, वर, अंकुश, टाँकी, फाँस, कपाल, डंका, रुद्राक्ष और शूल को हाथ में लिये हुए श्वेत दीप्तिवाले और उत्तम प्रभाववाले पंचमुख ईशानजी, ऊर्ध्व (ऊपर) दिशा में मेरी रक्षा करें।

१४—चन्द्रमौलिजी मेरे शिर की रक्षा करें और विश्वनाथजी सदैव नासिका की रक्षा करें।

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः
कपोलमव्यात्सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो
जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥१५॥

कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः
पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु-
र्वक्षस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥१६॥

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा
मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी ।

१५—श्रुतियों में जिनका यश गाया गया है वे शिवजी मेरे कानों की रक्षा करें, कपालीजी सदैव मेरे कपोल की रक्षा करें। पंचमुखजी सदैव मेरे मुख की रक्षा करें, वेदजिह्वजी सदैव मेरी जिह्वा की रक्षा करें।

१६—गिरीश नीलकण्ठजी मेरे कण्ठ की रक्षा करें और पिनाक को हाथ में धारण किए हुए शिवजी मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें। धर्मबाहुजी मेरी भुजाओं के मूल की रक्षा करें और दक्ष के यज्ञ का नाश करनेवाले मेरे वक्षःस्थल की रक्षा करें।

१७—गिरीन्द्र धनुषवाले शिवजी मेरे पेट की रक्षा करें और कामदेव के नाशक शिवजी मेरे मध्य भाग की रक्षा

हेरम्बतातो मम पातु नाभिं
पायात्कटिं धूर्जटिरीश्वरो मे ॥१७॥

ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो
जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात् ।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्
पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्यपादः ॥१८॥

महेश्वरः पातु दिनादियामे
मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः ।
त्रिलोचनः पातु तृतीययामे
वृषध्वजः पातु दिनान्तयामे ॥१९॥

करें। गणेशजी के पिता मेरी नाभि की रक्षा करें। धूर्जटी शिवजी मेरी कटि की रक्षा करें।

१८—कुबेर के मित्र मेरे दोनों उरुओं की रक्षा करें। जगदीश्वरजी मेरे दोनों घुटनों की रक्षा करें। पुङ्गवकेतुजी मेरी दोनों जंघाओं की रक्षा करें और देवताओं द्वारा वन्दित चरणवाले शिवजी मेरे चरणों की रक्षा करें।

१९—दिन के पहले प्रहर में महेश्वरजी मेरी रक्षा करें। मध्य प्रहर में वामदेवजी मेरी रक्षा करें। तीसरे प्रहर में त्रिलोचनजी मेरी रक्षा करें और दिन के अन्तिम प्रहर में वृषध्वजजी मेरी रक्षा करें।

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां
गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने
मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम् ॥२०॥

अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां
स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम् ।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां
सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ॥२१॥

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः
पायाद्व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः ।

२०—रात्रि के पहले प्रहर में शशिशेखरजी मेरी रक्षा करें। गंगाधरजी अर्धरात्रि में मेरी रक्षा करें और मृत्युंजयजी सब समय मेरी रक्षा करें।

२१—भीतर स्थित होकर शंकरजी मेरी रक्षा करें, स्थाणुजी सदैव बाहर मेरी रक्षा करें, उसके मध्य में पशुओं के पति मेरी रक्षा करें और सदाशिवजी सब ओर से मेरी रक्षा करें।

२२—(सर्व) लोकों के एकमात्र स्वामी शिवजी खड़े रहने के समय मेरी रक्षा करें, चलते समय प्रमथाधिनाथजी

वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं
मामव्ययः पातु शिवः शयानम् ॥२२॥

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः
शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः ।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे
पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः ॥२३॥

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः
स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः ।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवार-
महाभयाद्रक्षतु वीरभद्रः ॥२४॥

मेरी रक्षा करें, वेदान्त के भी (विशुद्ध बुद्धि द्वारा) जानने योग्य शिवजी बैठे रहने के समय मेरी रक्षा करें तथा अव्यय (आदि और अन्तरहित) शिवजी सोते समय मेरी रक्षा करें।

२३—नीलकण्ठजी मार्ग में मेरी रक्षा करें, शैलादि दुर्गों में त्रिपुरारिजी मेरी रक्षा करें तथा वनवासादि के महाप्रवास में उदार शक्तिवाले मृगव्याधजी मेरी रक्षा करें।

२४—कल्पान्त के आटोप में प्रवीण, क्रुद्ध तथा प्रकट अट्टहास से ब्रह्माण्ड को चलायमान कर देनेवाले वीर-

पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथ-
सहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां
छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया ॥२५॥

निहन्तु दस्यून्प्रलयानलार्चि-
र्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य ।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्
सन्त्रासयत्वीशधनुः पिनाकः ॥२६॥

दुःस्वप्नदुःशकुनदुर्गतिदौर्मनस्य-
दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुःसहदुर्यशांसि ।

भद्रजी भयङ्कर शत्रुसेना रूपी समुद्र के भीषण भय से मेरी रक्षा करें।

२५—हजार, लक्ष, दश हजार और करोड़ों पैदल, घोड़े एवं हाथियों के गर्जन तथा रथों के लौहादि की भीषणतावाली सैकड़ों अक्षोहिणियों को मृडजी कुठार की धार से काटें।

२६—प्रलयाग्नि के समान ज्वाला से जलता हुआ त्रिपुरान्तकजी का त्रिशूल शत्रुओं को मारे और शिवजी का पिनाक धनुष व्याघ्र, सिंह, ऋक्ष, भेड़िया आदि हिंसक जीवों को भगावे।

उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिं-
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥२७॥

अथ मन्त्रप्रारम्भः

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकल लोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्तिभञ्जनाय सकलजगद्भयङ्कराय सकललोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय निरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निःसङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महारुद्र महा-

---

२७—लोकों के स्वामी शिवजी मेरे दुःस्वप्न, दुःशकुन, दुर्गति, दुर्मनस्य, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुस्सह अयश तथा उत्पात, ताप और विष के भय को तथा दुष्ट ग्रहों के दुःख एवं रोगों को नाश करें।

रौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव काल-
भैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्ग-
खड्ग, चर्म्मपाशांकुशडमरुशूलचापबाणगदाशक्तिभि-
ण्डिपालतोमरमुसलमुद्गरपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीश-
तघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राक-
राल विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्डमण्डल नागे-
न्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर
मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वे-
श्वर विश्वरूप वृषभवाहन विषभूषण विश्वतो-
मुख सर्वतो रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभ-
यमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयो-
त्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चौरान्मारय
मारय ममशत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय
कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वा-
ङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय
बाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषय भू-
तानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्र-
ह्मराक्षसान्सन्त्रासय सन्त्रासय ममाभयं कुरु कुरु
वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धार-
योद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्यायया-
प्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन

मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।❀

❀ ऐश्वर्यों से युक्त सदाशिवजी को नमस्कार है, समस्त तत्त्वात्मक और सब तत्त्वों में विहार करनेवाले, सब लोकों के एकमात्र रचनेवाले, पालनेवाले एवं संहार करनेवाले को प्रणाम है। सब लोकों के एकमात्र साक्षी, सब वेदों में गुप्त तथा सबके वरदायक, पाप एवं दुःखों के नाशक, समस्त संसार को अभय करनेवाले, सब लोकों के एकमात्र कल्याण करनेवाले, चन्द्रभाल, सदैव अपने ही प्रकाशवाले, निर्गुण, निरुपम, अरूप, अभास, निर्व्याधि, निष्प्रपञ्च, निष्कलङ्क, निर्द्वन्द्व, निस्सङ्ग, निर्मल, निर्गम, नित्यरूपविभव, निरुपमविभव, निराधार, नित्यशुद्धबुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्द, अद्वय, परम शान्त प्रकाश और तेजोमय रूपवाले आपको प्रणाम है। हे महारुद्र, महारौद्र, भद्रावतार, दुःखदावदारण, महाभैरव, कालभैरव, कल्पान्त भैरव, कपालभालधर आपकी जय हो। हे खट्वाङ्ग, तलवार, ढाल, फाँस, अंकुश, डमरू, शूल, धनुष, बाण, गदा, शक्ति, भिंदिपाल, तोमर, मुसल, मुद्गर, पट्टिश, परशु, परिघ, भुशुण्डी, शतघ्नी और चक्रादिक अस्त्रों से युक्त भयंकर हजार हाथोंवाले, हे मुखदंष्ट्राकराल, विकटाट्टहास विस्फारित ब्रह्माण्डमण्डल, नागेन्द्रकुण्डल, नागेन्द्रहार, नागेन्द्रवलय, नागेन्द्रचर्मधर, मृत्युंजय, त्र्यम्बक, त्रिपुरान्तक, विरूपाक्ष, विश्वेश्वर, विश्वरूप, वृषवाहन, विषभूषण, विश्वतोमुख सब ओर से मेरी रक्षा कीजिये। ज्वलज्वल महामृत्युभय को, अपमृत्युभय को नाश कीजिये, नाश कीजिये। रोग के भय को नाश कीजिये, नाश कीजिये।

ऋषभ उवाच—

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतंमया ।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥२८॥

विष और सर्प के भय को शान्त कीजिये, शान्त कीजिये । चोरों को मारिये, मारिये । मेरे शत्रुओं का उच्चाटन कीजिये, उच्चाटन कीजिये । शूल से विदारण कीजिये, विदारण कीजिये । कुठार से भेदन कीजिये, भेदन कीजिये । तलवार से काटिये, काटिये । खट्वाङ्ग से नाश कीजिये, नाश कीजिये । मुसल से पीसिये, पीसिये । बाणों से मारिये, मारिये । राक्षसों को डरवाइये, डरवाइये । भूतों को भगाइये, भगाइये । मुझको अभय कीजिये, अभय कीजिये । डरे हुए मुझको समझाइये, समझाइये । नरक के भय से मुझको उबारिये, उबारिये । जिलाइये, जिलाइये । क्षुधा और प्यास लगने के कारण मुझको तृप्त कीजिये, तृप्त कीजिये । दुःख से विकल मुझको आनन्दित कीजिये, आनन्दित कीजिये । शिवकवच से मुझको आच्छादित कीजिये, आच्छादित कीजिये । हे त्र्यम्बक, सदाशिवजी ! आपको प्रणाम है, प्रणाम है ।

२८—ऋषभजी बोले कि सब प्राणियों की समस्त पीड़ाओं को नाश करनेवाले इस वरदायक गुप्त शिवकवच को मैंने कहा ।

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम् ।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात् ॥२९॥

क्षीणायुः प्राप्तमृत्युर्वा महारोगहतोऽपि वा ।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति ॥३०॥

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्द्धनम् ।
योऽधीते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥३१॥

महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः ।
देहान्ते मुक्तिमाप्नोति शिववर्मानुभावतः ॥३२॥

२९—सदैव जो मनुष्य शिवजी के उत्तम कवच को धारण करता है उसको शिवजी की दया से कहीं भय नहीं होता।

३०—क्षीण, दुर्बल और मृत्यु को प्राप्त, महारोगों से नष्ट मनुष्य भी शीघ्र ही सुख को पाता है। इसके द्वारा शीघ्र दीर्घ आयुर्बल और सुख प्राप्त होता है।

३१—सब प्रकार की दरिद्रता को नाश करनेवाले, सुन्दर मङ्गल को बढ़ानेवाले शिवकवच को जो धारण करता है वह देवताओं द्वारा पूजा जाता है।

३२—मनुष्य महापातकों के समूहों से और उपपातकों से छूट जाता है। शिवकवच के प्रभाव से वह अन्त समय में शिवजी के निकट पहुँच जाता है।

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम् ।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः सुखमवाप्स्यसि ॥३३॥

श्रीशिवकवचं समाप्तम्

शुभं भूयात् ।



३३—हे वत्स, तुम भी श्रद्धापूर्वक मेरे दिये हुए इस उत्तम 'शिवकवच' को धारण करो । तुम इसके द्वारा शीघ्र सुख प्राप्त करोगे ।

गौरीशंकर ! करु सदा, गौरीपति की आश ।
भव सों पार उतारिहैं, काटहिंगे यमपाश ॥

इति श्रीशिवकवच भाषाटीका ।





भक्ति-ग्रन्थमाला की अत्युपयोगी पुस्तकें

शिव-भक्तमाल (सचित्र)	२)
शिव-भक्तमाल पूर्वार्द्ध सादा	॥)
शिव-भक्तमाल उत्तरार्द्ध	॥)
द्वादशज्योतिर्लिङ्ग	-)॥
काशीमोक्षनिर्णय (सटीक)	।-)
शिव-पूजा-विधान	।)
शैव-प्रमोद	।)
शिवाशिवललितावली	॥)
ओङ्कार और शिवलिङ्ग	॥)
शिव-महिम्नस्तोत्र (पदच्छेद अन्वय सहित)	।)
शिव-महिम्न, शिव-कवच, शिव-सहस्रनाम (एक साथ)	॥)
शिव-कवच (भाषा टीका)	-)॥
शिव-सहस्रनाम	=)
श्रीसदाशिव-सुधा (पूर्वार्धं)	॥=)
भजन-सुधा	≡)

पता—

गौरीशङ्कर गनेड़ीवाला,

छपरा (सारन) ।

